ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(2): 594-596
www.allresearchjournal.com
Received: 09-12-2021
Accepted: 26-01-2022

डॉ. संतोष कुमार सिंह
सहायक आचार्य, हिंदी–विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. संतोष कुमार सिंह
सहायक आचार्य, हिंदी–विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

आधुनिक हिन्दी फिल्मों में महिला सशक्तिकरण

डॉ. संतोष कुमार सिंह

प्रस्तावना

इतिहास के इस पूरे सफर की पड़ताल के बाद अब हम बात करते हैं इक्कीसवीं सदी की, जिसमें महिलाओं ने एक नया इतिहास रचा, अपनी शक्ति और पहचान को एक नया आयाम दिया। आज इक्कीसवीं सदी में हम जिस स्त्री सशक्तिकरण की बात करते हैं, उसी सशक्तिकरण की सुगबुगाहट हमारे हिंदी सिनेमा में महिलाओं की रचनात्मक शक्ति के रूप में सामने आले लगी थी। इस दौर में सशक्त अभिनेत्रियों का सिनेमा जगत् में पदार्पण हुआ और दर्शकों पर उनका जादू चढ़ कर बोलने लगा। आइए अब हम नजर डालते हैं पिछले दस सालों की फिल्मों पर जिसमें दर्शकों को खूबसूरत महिला केंद्रित फिल्मों का उपहार मिला है।

मातृभूमि (2003)– आप स्त्री बगैर किसी दुनिया की कल्पना कर सकते हैं? पर मनीष झा ने इस कड़वे हकीकत से समाज को अवगत कराया। मातृभूमि – ए नेशन विदाउट वुमन मनीष झा की 2005 में रिलीज, इस मायने में एक महत्वूपर्ण फिल्म है कि यह कन्या हत्या की इस समस्या को गहरे असर के साथ दर्शक के मन में उतार देती है। इस फिल्म में लड़की के पैदा होने पर उसे दूध के तपेले में डुबो कर मार दिया जाता है। इसमें प्रमुख किरदार टयूलिप जोशी ने निभाया है। इस फिल्म और इसकी थीम को दर्शकों ने काफी सराहा।

चमेली (2004)– यह कहानी एक सेक्स वर्कर और बैंकर की है। इसमें तुच्छ समझी जाने वाली सेक्स वर्कर की संवेदनाओं को बड़े मार्मिक तरीके से दिखाया गया है। करीना कपूर के खूबसूरत अभिनय और बोल्ड अंदाज व बैंकर की भूमिका में राहुल बोस के अभिनय के साथ सुधीर मिश्रा ने दर्शकों के लिए अलग थीम की फिल्म दी जिसे हमेशा याद रखा जाएगा।

परिणीता (2005)– परिणीता का मतलब है विवाहित महिला। सुधीर मिश्रा निर्देशित फिल्म परिणीता के लीड रोल में विद्या बालन ने इस फिल्म को जीवंत बनाया। इस फिल्म को दर्शकों ने खूब सराहा और इसे अवार्ड भी मिले।

डोर (2006)– यह फिल्म दो भिन्न तबके की दो महिलाओं पर आधारित है जो एक दूसरे से अंजान होते हुए भी होनी के एक डोर से बंधी हुई हैं। इस संबंध में एक की वीरान जिंदगी दूसरे को उजड़ने से बचा सकती है पर बीच में काफी फासले हैं। यह फिल्म महिला सशक्तीकरण का बेहतर – उदाहरण है। गुल पनाग और आयशा टाकिया ने मुख्य किरदार को अपने अभिनय से जीवंत बना दिया है।

चक दे इंडिया (2007)–यह एक स्पोर्ट्स ड्रामा फिल्म है। इसमें महिला हॉकी टीम की स्थितियां का बखूबी चित्रण किया गया है। अच्छी खिलाड़ी होते हुए भी किन मुश्किलों ने इन्हें पीछे कर रखा है इस सब को फिल्म में बड़ी खूबसूरती से दिखाया गया है।

फैशन (2008)– रैंप पर चलने वाली खूबसूरत और सेक्सी फिगर वाली मॉडल्स की जिंदगी की तल्ख सच्चाई बयाँ करती यह फिल्म दर्शकों पर गहरी छाप छोड़ गयी। इस फिल्म को दो नेशनल आवार्ड भी प्राप्त हुए। ये दोनों ही सम्मान इस फिल्म की अभिनेत्रियों प्रियंका चोपड़ा और कंगना रानौत को मिले।

इश्किया (2010)– इस फिल्म में विद्या बालन की भूमिका काफी सशक्त है। नसीरूद्दीन शाह और अरसद वारसी के साथ उन्होंने इस फिल्म से दर्शकों के दिल पर अमिट छाप छोड़ी है।

नो वन किल्ड जेसिका (2011)– जेसिका लाल की अनसुलझी हत्याकांड पर आधारित है यह फिल्म। इसमें दो मजबूत महिलाओं की जिंदगी का चित्रण है। इस फिल्म में मुखर्जी ने निडर पत्रकार की भूमिका निभायी है और विद्या बालन ने जेसिका लाल की बहन का किरदार काफी खूबसूरती से निभाया है। इस फिल्म को काफी सराहा गया।

द डर्टी पिक्चर (2011)–मिलन लूथरिया निर्देशित फिल्म द डर्टी पिक्चर दक्षिण की अभिनेत्री सिल्क स्मिता जिंदगी पर आधारित है। इस फिल्म में विद्या बालन के बोल्ड अंदाज ने किरदार को जीवंत बना दिया। इसके लिए उन्हें अवार्ड भी दिए गए।

इंग्लिश विंग्लिश (2012)– पंद्रह वर्षो के बाद बड़े पर्दे पर वापस आयीं खूबसूरत और मशहूर अभिनेत्री श्रीदेवी ने इस फिल्म से यह दिखा दिया कि अब भी वह एक्टिंग कर सकती हैं। यह फिल्म भी महिलाओं को सशक्तिकरण का खूबसूरत उदाहरण है।

कहानी (2013)– कहानी का सबसे मजबूत पहलू इसकी कहानी और स्क्रीनप्ले थी। विद्या बालन ने अपनी फिल्मों से महिलाओं को संवेदनशीलता की नई ऊंचाईयाँ दी हैं। 'परिणिता' से लेकर 'इश्किया' तक उन्होनें महिलाओं के अलग–अलग रूपों से जिया है। इस फिल्म में विद्या बागची लंदन से कोलकाता अपने पति अर्णब बागची को ढूँढने के लिए आई है जो दो महीनों से लापता है। वह पुलिस स्टेशन जाती है। उस ऑफिस में जाती है जहाँ अर्णब अपने प्रोजेक्ट के लिए आया था। उस होटल में जाती हैं जहाँ वह रूका हुआ था, लेकिन उसका कुछ पता नहीं चलता। सभी कहते हैं कि इस नाम का शख्स कभी भी लंदन से कोलकाता आया ही नहीं। विद्या को कुछ क्लू मिलते हैं, जिनके सहारे वह आगे बढ़ती हैं। विद्या बालन वर्तमान दौर की निस्संदेह सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री हैं। हीरो प्रधान बॉलीवुड में उनके लिए इससे बड़ी क्या बात हो सकती है कि उन्हें ध्यान में रखकर फिल्में लिखी जा रही हैं। पा, इश्किया, नो वन किल्ड जेसिका, द डर्टी पिक्चर के बाद कहानी भी ऐसी फिल्म है जिस पर वे गर्व कर सकती हैं।

1950–2000 के दशक की सशक्त अभिनेत्रयाँ

50–60 के दशक में अधिकतर फिल्मों में पुरूष का किरदार ज्यादा मजबूत होता था, लेकिन मधुबाला और मीना कुमारी जैसी अभिनेत्रियों ने ये साबित कर दिया कि फिल्मों में महिलाओं की भूमिका कितनी सशक्त है। आइए अब नजर डालते हैं 50–90 के दशक की सशक्त अभिनेत्रियों पर।

मधुबाला

'रंग' का रंग जमाने ने बहुत देखा हैं। हिंदी सिनेमा में बतौर क्लासिकल अभिनेत्री मधुबाला का नाम सबसे पहले लिया जाता है। मधुबाला की खूबसूरती और उनकी अदाएँ सबसे जुदा है। उनके अभिनय में एक अलग की कशिश है, उनके चेहरे से नजर ही नहीं हटती। इतने दशक के बाद भी मधुबाला का खुमार बरकरार है। हर दशक में मधुबाला अन्य अभिनेत्रियों की आदर्श हैं। उनके अभिनय में एक आदर्श भारतीय नारी को देखा जा सकता है। चेहरे द्वारा भावाभिव्यक्ति तथा नजाकत उनकी प्रमुख विशेषता है। उनके अभिनय प्रतिभा, व्यक्त्वि और खूबसूरती को देख कर यही कहा जाता है कि वह भारतीय सिनेमा की अब तककी सबसे महान् अभिनेत्री हैं।

क्लासिकल अभिनेत्री मीना कुमारी

फिल्म अभिनेत्री मीना कुमारी को तो सब जानते हैं और शायद ही कोई ऐसा दर्शक हो जिसके मन में मीना कुमारी के संजीदा अभिनय के प्रभाव से करूणा का सोता ने फूट पड़ा हो। वे एक ऐसी सच्ची कलाकार थीं जो अपनी भूमिका में अपनी वास्तविक जिन्दगी की अनुभूति करती थीं इसलिए उनकी भूमिकाएँ अपना अमिट प्रभाव छोड़ती थीं। उनके बाद उन जैसी दूसरी कोई अभिनेत्री हिन्दी सिनेमा में नहीं आयी और ना ही वैसी फिल्में ही बन सकीं।

संवेदनशील शायर मिजाज व्यक्ति के पास एक समय ऐसा भी आता है जब उसे मौत से भी मुहब्बत होने लगती है। दिल के और जमाने के दर्द को झेलती मीना कुमारी ने इस अहसास को खूब जिया है जो उनकी नग्मों में भी साफ–साफ झलका है।

70–80 में रेखा

फिल्मों में कच्ची उम्र में काम शुरू किया। सावन–भादों में नवीन निश्चल के साथ बड़े पर्दे पर सशक्त अभिनय किा दर्शकों ने उन्हें साँवले रंग की होते हुए भी सहारा। हमेशा ही काँजीवरम सिल्क की साड़ी में नजर आने वाली रेखा जी जब गुलजार साहब का कोई शेर दोहराती हैं तब सच्चे दिल से बोली हुई उनकी बात दर्शकों के दिल को छू जाती है! मनमोहक हंसी, खूबसूरती और कला का संगम है रेखा। फिल्मों में इनके योगदान का मुकाबला नहीं होता।

हेमा मालिनी

प्रसिद्ध अभिनेत्री और नृत्यांगना हेमा मालिनी बॉलीवुड की उन गिनी–चुनी अभिनेत्रियों में शामिल हैं, जिनमें सौंदर्य और अभिनय का अनूठा संगम देखने को मिलता है। ये आज भी बॉलीवुड में ड्रीमगर्ल के नाम से जानी जाती हैं। लगभग चार दशक के करियर में उन्होंने कई सुपरहिट फिल्मों में काम किया। बाद में सत्तर के दशक में इसी निर्माता–निर्देशक ने उनकी लोकप्रियता को भुनाने के लिए उन्हें लेकर 1973 में (गहरी चाल) फिल्म का निर्माण किया।

हेमा मालिनी को पहली सफलता वर्ष 1970 में प्रदर्शित फिल्म (जॉनी मेरा नाम) से हासिल हुई इसमें उनके साथ अभिनेता देवानंद मुख्य भूमिका में थे। फिल्म में हेमा और देवानंद की जोड़ी को दर्शकों ने सिर आँखों पर लिया और फिल्म सुपरहिट रही। हेमा मालिनी को प्रारंभिक सफलता दिलाने में निर्माता–निर्देशक रमेश सिप्पी की फिल्मों का बड़ा योगदान रहा। फिल्म सोले में तो उनका (बसन्ती) का कोई जबाब नहीं था।

80–90 की माधुरी दीक्षित

सादगी और प्रतिभा की धनी माधुरी दीक्षित बॉलीवुड इंडस्ट्री में अपनी मनमोहक मुस्कान के लिए जानी जाती हैं। बॉलीवुड में खूबसूरती और प्रतिभा की कोई कमी नहीं है लेकिन फिर भी माधुरी की झलक किसी में नहीं है। माधुरी का हुस्न और उनकी अदाकारी सबसे अलग है। माधुरी ने अपने लंबे फिल्मी कैरियर में हर तरह के रोल निभाएँ हैं। माधुरी दीक्षित को आज भी हिंदी फिल्म की नई अभिनेत्रियाँ अपना आदर्श मानती हैं। सिर्फ अभिनय में ही नहीं बल्कि क्लासिकल डांस में भी माधुरी का जवाब नहीं। 80 और 90 के दशक में माधुरी ने अपनी हिट फिल्मों की बारिश कर दी थी। 15 मई 1965 में मुंबई के मराठी परिवार में जन्मी माधुरी ने हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में अपनी एक अलग पहचान बनाई है।

फिल्मी कैरियर के साथ–साथ माधुरी अपने निजी जीवन में भी काफी सफल रही हैं। माधुरी को पद्म श्री सम्मान से नवाजा गया है। माधुरी को सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के लिए फिल्मफेयर जैसे कई सम्मानीय पुरस्कारों से नवाजा गया है। फिलहाल माधुरी टीवी पर कई सारे रियालिटी शो की जज बनती नजर आती हैं।

2000 की डर्टी गर्ल

हिंदी फिल्मों में अलग–अलग किरदार निभाने वाली विद्या का फिल्मी कैरियर ज्यादा लंबा नहीं है। लेकिन अपने इस छोटे से कैरियर में विद्या ने अपने अभिनय से लोगों के दिल में एक अलग जगह बनाई हैं। आज की फिल्मों में कहानी कम और मसाला ज्यादा होता है, ऐसे में भी विद्या ने लीक से हटकर फिल्में बनाई हैं। विद्या की फिल्मों में कहीं न कहीं महिलाओं की संघर्ष की कहानी झलकती है। कहानी? डर्टी पिक्चर, परिणीता में विद्या ने अपने किरदार की मिशाल कायम की है।

नए दौर में महिला फिल्मकार और निर्देशक

एम जमाना था जब हिंदी फिल्म निर्माता सीधे–सादे कपड़े पहनते थे, हिंदी में सोचते थे, और हिंदी में ही बातचीत करते थे। इतना ही नहीं महिला निर्देशक सिर्फ महिला प्रधान फिल्में बनाती थीं

और वो भी छोटें बजट की। ये आर्ट हाउस फिल्में होती थीं और चुनिंदा दर्शकों के लिए थीं। लेकिन आज के निर्माताओं की बात करें, मसलन अनिल कपूर की छोटी बेटी रिया कपूर को ही लें– वो अपने अंदाज में किसी स्टार से कम नहीं हैं, आज की पीढ़ी की तरह अंग्रेजी में सोचती हैं और अंग्रेजी में ही बात करती हैं। यानि आज सभी महिला फिल्मकार–जैसे 'आयशा' की निर्देशिका राजश्री ओझा फरहा खान के नक्शे कदम पर चलना चाहती हैं और सिर्फ मुख्यधारा की फिल्में ही बनाना चाहती हैं।

भूमिकाओं में वास्तविकता

एक जमाना था जब हीरोइनें सकारात्मक भूमिकाओं को भी किसी पीड़ित व्यक्ति की तरह निभाती थीं, जैसे–गुलजार की खुशबू में हेमामालिनी। इसके बाद महिलाएँ भूमिकाओं में विलेन की तरह नजर आने लगीं, जैसे–कर्ज में सिमी ग्रेवाल। आज की हीरोइनें पटकथा लेखक की मदद से साकारात्मक भूमिकाओं को असल तरीके से पेश करती है, जैसे–जब वी मेट में करीना कपूर या फिर नकारात्मक भूमिकाओं को भी सकारात्मक बना देती हैं, जैसे–कॉरपोरेट में विपाशा बसु। सोनम कपूर साँवरिया, दिल्ली–6 और आई हेट लव स्टोरीज के बाद आयशा में थोड़ सशक्त, थोड़ी कमजोर, कुछ पॉजिटिव और कुछ नेगेटिव चरित्र का मिश्रण लेकर आईं।

निर्माता रिया कपूर जो खुद नई हैं, पाँच नए कलाकारों–इरा दूबे, अंजलि दूबे, सायरस साहूकार और अरूणोदय सिंह को परिचय कराया। फिल्म निर्देशिका राजश्री ओझा की भी यह पहली फिल्म थी। आयशा में निर्माता, निर्देशक, पटकथा लेखक और मुख्य कलाकार के रूप बॉलीवुड की सृजनशील महिलाओं ने ही भूमिका निभाई। आयशा फिल्मोद्योग की उन फिल्मों में से एक बनी जिनमें बॉलीवुड की महिला शक्ति की रचनात्मक नजर आई। रिया कपूर इस फिल्म के निर्माण के साथ 23 वर्ष की उम्र में ही बॉलीवुड के सबसे युवा निर्माताओं में शामिल हो गई।

रिया ने इस फिल्म के लिए पैसा जुटाया तो राजश्री ओझा ने निर्देशन किया और देविका भगत ने पटकथा लिखी। अमिता सहगल फिल्म की कास्टिंग निर्देशक हैं तो श्रुति गुप्ते ने प्रोडक्शन डिजायनिंग का काम संभाला। संवाद लेखन का काम दीपिका और ऋतु भाटिया ने संभाला। हाल में शाहरूख खान ने अपनी फिल्म चेन्नई एक्सप्रेस में दीपिका को क्रेडिट देकर इसकी पहल की। साल 2014 में कई ऐसी फिल्में आ रही हैं जिनमें महिलाओं की भूमिका अहम हैं, कुछ फिल्में तो केवल महिलाओं पर ही केंद्रित है। कई ऐसी फिल्में आ रही हैं जिनमें एक्ट्रेस का नाम लिया जाएगा।

चेन्नई एक्सप्रेस–शाहरूख खान फिल्म रिलीज से पहले सरेआम घोषणा की थी कि फिल्म में दीपिका पादुकोण का नाम उनके नाम से पहले आएगा।

गुंडे– अली अब्बास जफर की फिल्म गुंडे के प्रोमो से ही पता चलता है कि फिल्म में प्रियंका दोनों हीरो की लीड कर रही हैं। फिल्म में रनवीर सिंह और अर्जुन कपूर हैं।

गुलाब गैंग– सौमिक सेन की ये फिल्म तो पूरी तरह से महिलाओं पर केंद्रित फिल्म है। फिल्म में महिलाओं के विकास और सुरक्षा की कहानी बयाँ की गई है।

मेरी कॉम–बायोपिक – प्रियंका चोपड़ा इस फिल्म में साहसी खिलाड़ी मेरी कॉम के जीवन के संघर्ष को पर्दे पर उतारने जा रही हैं। यहाँ भी एक्ट्रेस की भूमिका अहम है।

क्वीन– विकास बहल की फिल्म क्वीन में कंगना रानौत पंजाबी कुड़ी का रोल निभा रही हैं। राजकुमार राव फिल्म में रहेंगे लेकिन ये कहना गलत नहीं है कि फिल्म में कंगना का महत्व ज्यादा है।

सुपर नानी– इंद्र कुमार की फिल्म सुपर नानी में रेखा सरमन जोशी के साथ दिखेंगी। रेखा अपने आप में ही फिल्म का सेंट्रिक प्वांइट है।

दावत–ए–इश्क–हबीब फैजल की फिल्म दावत–ए–इश्क में परिणीति चोपड़ा और आदित्य राय कपूर की इस फिल्म की इस फिल्म में भी परिणीति को रोल अहम है। फिल्म में शुरू में ही परिणीति को क्रेडिट दे दिया गया है।

बेवकूफियाँ –नुपूर अस्थाना की फिल्म बेवकूफियाँ में आयुष्मान खुराना के साथ सोनम कपूर हैं। सोनम वैसे भी खुराना से सीनियर हैं।

एनएच 10– नवदीप सिंह की फिल्म एनएच10 को कुछ दिक्कतें आ रही थी, लेकिन अनुष्का शर्मा ने आगे बढ़कर इस प्रोजेक्ट को साइन किया क्योंकि इसकी कहानी बहुत आकर्षक है। फिल्म में उनकें साथ टीवी स्टार नील भुपालम होंगे।

महिलाओं की शक्ति पर आधारित गाने–

फिलम गैंग्स ऑफ वासेपुर में भी वुमनिया पर एक गाना बनाया गया है। इसके अलावा नारी शक्ति पर कई वीडियों बने, कई फिल्में भी बनीं। रियालटी शो सत्यमेव जयते में भी नारी की शक्ति का प्रदर्शन किया गया है।

राम संपत का गाया हुआ गाना ओ री चिरय्या इस गाने में नारी को प्यार की मूरत कहा गया है। इस गाने में कहा गया है कि नारी एक चिड़िया जैसी होती है जो कुछ दिनों बाद उड़ जाती है। जिस भी घर जाती है उसी को रोशन कर देती है।

एक और गाना मुझे क्या खरीदेगा रूप्पया इस गाने में नारी को किसी सामान के साथ तुलना करने की बात पर नाराजगी जताई गई है। इस गाने में औरत को सम्मान देने बात कही गई है। शादी के समय उसे दहेज के नाम पर पराये घर बेच दिया जाता है। नारी का अपना कोई अस्तित्व नहीं है वो तो बस धन की एक थैली है जिसे लोग खरीदते और बेचते हैं।

दिल्ली गैंगरेप की घटना तो आज तक लोग भूल नहीं पाए हैं। इस घटना के विरोध में लोग सड़कों पर उतरे। सोशल नेटवर्किंग साइट्स, मीडिया में हर तरफ विरोध की ही गूँज सुनाई दी। लोगों में महिलाओं की सुरक्षा को लेकर जागरूकता पैदा करने के लिए कई वीडियो बने कई गाने बने।

सन्दर्भ

1. सिंह जय, भारतीय सिनेमा का सफरनामा, प्रकाशन प्रभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, सूचना भवन, सी.जी.ओ. नई दिल्ली
2. सिनेमा–सिनेमा, दयानंद पांडेय, जनवाणी प्रकाशन, दिल्ली
3. राजावत नारायण सिंह, हिन्दी सिनेमा के सौ वर्ष, भारतीय पुस्तक परिषद्
5. socialissues.jagranjunction.com
6. women empowerment.jagranjunction.com
7. www.chauthiduniya.com
8. www.jansangharsh.com
9. www.samayantar.com
10. www.aadhiabadi.com
11. www.dw.denavbharattimes.indiatimes.com
12. www.livehindustan.com